रवींद्रनाथ टैगोर का लेखन महासमुद्र : प्रयाग शुक्ल

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्य अकादमी के तत्वावधान में रवींद्रनाथ टैगोर की 162वी जयंती पर अनुवादों में रवींद्रनाथ टैगोर की प्राप्ति (सेलिब्रेटिंग रवीन्द्रनाथ टैगोर इन ट्रांसलेशन) विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। लेखिका मालाश्री लाल की अध्यक्षता में आयोजित इस सेमिनार में फेह. सीन. एजाज़ (उर्दू), एच.एस. शिवप्रकाश (कन्नड़), मोहनजीत (पंजाबी), प्रयाग शुक्ल (हिंदी) एवं राधा चक्रवर्ती (अंग्रेजी) ने रवींद्रनाथ टैगोर की कृतियों के अनुवादों के दौरान अनुभव साझा किए।

कार्यक्रम के शुरुआत में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत अंगवस्त्रम प्रदान कर किया। उन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि रवींद्रनाथ टैगोर भविष्यदृष्टा मानवतावादी थे और उनका लेखन सार्वभौमिक था। साहित्य अकादेमी ने उनकी अनेक रचनाओं का अनुवाद विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाया है। फ़ेह.सीन. एजाज ने रवींद्रनाथ टैगोर के उस वक्तव्य को कोट किया जिसमें उन्होंने कहा था कि मै मृत्यु के बाद भी अपने गीतों में जिंदा रहूंगा। उन्होंने

■ सेलिब्रेटिंग रवीन्द्रनाथ टैगोर इन ट्रांसलेशन विषय पर सेमिनार आयोजित

उनके गीतों में प्रकृति, प्रेम, स्वदेश आदि तत्त्वों के मिश्रण का उल्लेख करते हुए उनके कई गीतों का स्वयं द्वारा किए उर्दू अनुवाद में प्रस्तुत किया। एच.एस. शिवप्रकाश ने कन्नड में हुए टैगोर के अनुवादों की चर्चा करते हुए कहा कि उनके गीतों में मन के आजादी की जो बात कही गई है वो सबसे ज्यादा प्रभावित करती है।

मोहनजीत सिंह ने टैगोर द्वारा बलराज साहनी को पंजाबी में लिखने के लिए प्रोत्साहित करने की बात बताते हुए कहा कि टैगोर के मन में सिख गुरुओं द्वारा दी गई शहादत का बहुत प्रभाव था और उन्होंने गुरु गोविंद सिंह, बंदा सिंह एवं दारो सिंह पर कविताएं लिखी थी।

प्रयाग शुक्ल ने गीतांजलि के हिंदी अनुवाद की चर्चा करते हुए कहा कि टैगोर का लेखन एक तरह से महासमुद्र है और उसमें से मोती चुनना बहुत मुश्किल है। राधा चक्रवर्ती ने टैगोर द्वारा स्वयं किए गए अंग्रेजी अनुवादों की चर्चा करते हुए बताया कि वह उन अनुवादों से बहुत संतुष्ट नहीं थे। लेकिन वह जानते थे कि एक बड़े समुदाय तक अनुवाद द्वारा अपनी बात पहुँचाई जा सकती है। कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखक, अनुवादक एवं छात्र उपस्थित थे।